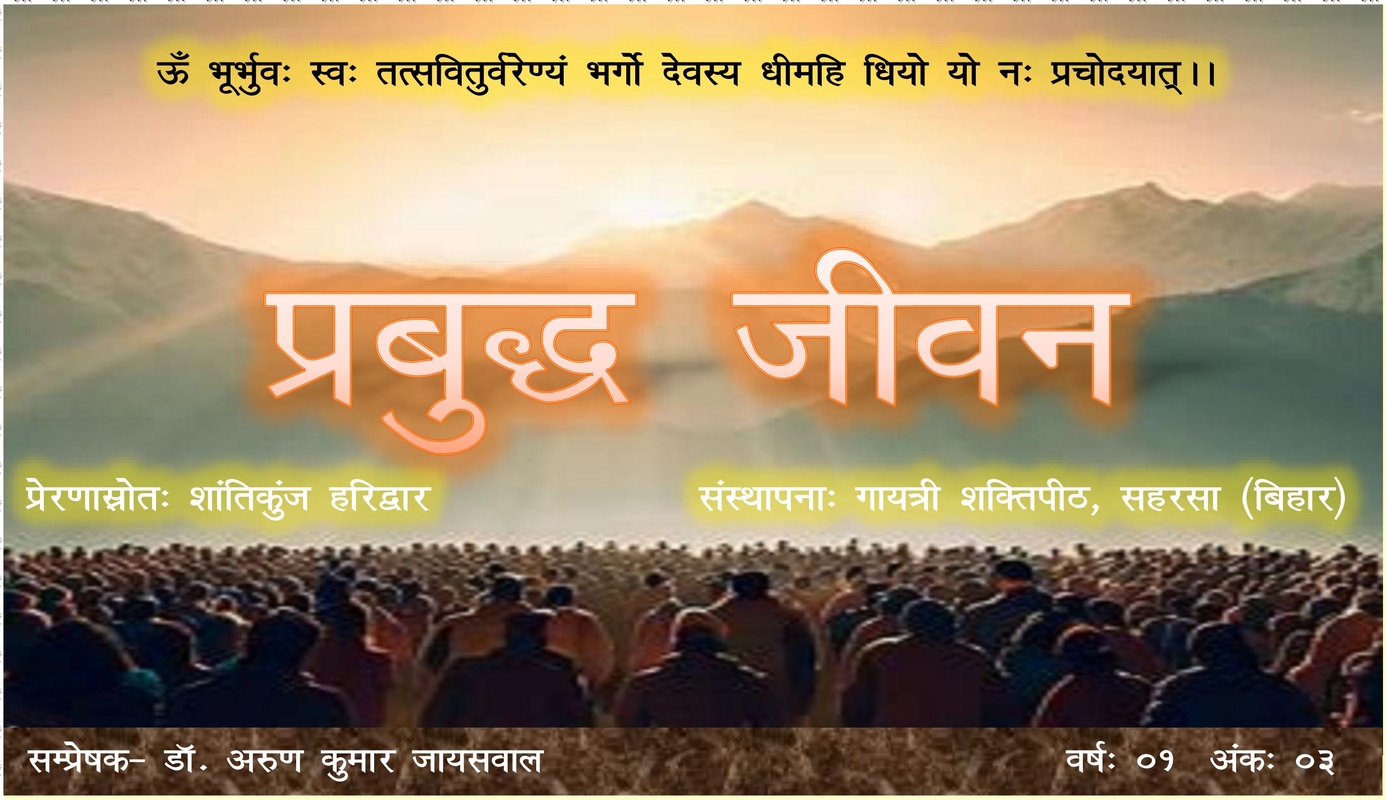


# 'भूः'

'भूः' के उच्चारण में भूदेवी का स्मरण व नमन है। इसमें जीवन के लोक का आलोक है। गायत्री महामंत्र की चेतना का आधार और अभिव्यक्ति है। इसी का सम्बल पाकर अप्रकट- प्रकट होता है। परोक्ष- प्रत्यक्ष बनता है। अदृश्य को दृश्य स्वरूप मिलता है। मृतिका-कणों की जड़ता- जीवन को जीवित करती है। धूलि की धूसरता से वनस्पतियों एवं प्राणियों का बहुरंगी संसार रचा जाता है। इसी से सृष्टि के अनेकों सुमन अपने रंगों की रंगीन छटा बिखेरते हैं। सुगन्धित सुरभि इसी से अपनी सम्मोहकता प्रसारित करती है।

भूः की गोद में हम सब जन्में। इसी के आंचल की छांव में हमारा जीवन मुस्कराया, खिलखिलाया। भू के भूतल की उर्वरता ने हमें पोषक अन्न दिया। सुस्वादु फल प्रदान किए। इसके पर्वतों, नदियों, झील-झरनों और महासागरों ने हम सबके लिए सुख का सृजन किया। भू के भूगर्भ ने हमें जल, खनिज, धातुओं के उपहार सौंपे। भू तत्त्व का सत्य रचयिता होने के साथ रक्षक और पोषक भी है। सुखकारक एवं उद्धारक है। जीवात्मा अपने परमकल्याण के लिए यही आश्रय खोजती है।

तैत्तिरीयोपनिषद् की शिक्षावल्ली के पांचवे अनुवाक में 'भूरितिवा अग्निः', 'भूरिति वै प्राणः' कहकर- इसे ऊर्जा-ऊष्मा, प्राण व जीवन का आधार बताया है। 'भूः' का भौतिक आयाम जीवात्मा को जीवन का सम्बल देता है। 'भूः' का दैविक आयाम जीवन को प्राणों की ऊर्जा प्रदान करता है। जबकि 'भूः' अपने आध्यात्मिक आयाम में गायत्री महामंत्र के परम लक्ष्य को प्रकट करता है। इसकी तत्त्वदृष्टि में ज्ञानसृष्टि है।

# हृदय से हृदय तक

हृदय की अनुभूति प्रेम है। इस प्रेम की परिभाषा, प्रगाढ़ता एवं प्रसार के लिए भगवान श्रीकृष्ण धरा-धाम पर आए। भाद्रपद का महीना, रिम-झिम बरसते मेघ, इन मेघों की घन-गरज के बीच आकाश में कड़कती-दमकती बिजली, घोर-घने अंधियारे को छिन्न-विच्छिन्न करते हुए परमात्मा के प्रेम का प्रकाश अवतीर्ण हुआ। कृष्ण पक्ष की अष्टमी की ठीक मध्य रात्रि को भगवान अपने भक्तों के लिए आए। परमात्मा का अवतरण असंख्य-असंख्य जीवात्माओं के लिए उनके प्रबल प्रेम की अभिव्यक्ति है। धरती पर आकर वे हम सबको अपना प्रेम सौंपते हैं। अपनी बाल-लीलाओं से हमें आनन्द प्रदान करते हैं।

अपनी लोक-लीला में अलौकिकता का प्रकाश प्रसारित करते हुए प्रभु- साधुजनों को संरक्षण, दुष्टों की दुष्टता का संहार करते हुए जीवन का सुपथ प्रशस्त करते हैं। वे जीवन की समझ सिखाते हैं, जीने की कला-कुशलता बताते हैं। हममें से हर एक की उंगली पकड़ अपने दिव्यधाम की राह दिखाते हैं। प्रभु सदा-सदा से हमारे हैं, हम सदा-सदा से उनके। हम उन्हें बार-बार भूल जाते हैं, परन्तु वे हमें कभी नहीं भूलते। कभी भूलेंगे भी नहीं। हमारे लिए बार-बार आयेंगे। अलग-अलग नाम, अलग-अलग रूप धारण कर वे हमारे पास आयेंगे। वे जीवन संघर्ष में हमारे साथी बनेंगे। हमें गीता का ज्ञान देंगे।

राजसी मेवा-मिष्ठान्न को छोड़कर हमारे घर का रूखा-सूखा बड़े प्यार से खायेंगे। अपने हर कर्म से, हर कृत्य से वे हमारे ऊपर अपने प्रेम को उड़ेलेंगे। हम सब १. घृणा, २. शंका, ३. भय, ४. लज्जा, ५. जुगुप्सा, ६. कुल, ७. शील एवं ८. जाति- इन आठ पाशों से जाने-अनजाने, चाहे-अनचाहे बंध गए हैं। अभी भी बंधे हुए हैं। इनसे मुक्त करने के लिए ही तो वे अष्टमी को आए। भाद्रपद कृष्ण अष्टमी की मध्य रात्रि में उनका जन्म इस जीवन सत्य का उद्घोष है कि परमपुरुष परमात्मा प्रत्येक जीवात्मा को अंधेरे में धकेलने वाले इन अष्टपाशों से मुक्त करने आए हैं। उनका अवतरण हम सबको अभयदान है। हमारे जीवन में ईश्वरीय प्रेम का प्लावन है। लौकिकता में अलौकिकता की अभिव्यक्ति है। मानवीय जीवन में दिव्य जीवन का उदय है। धरती पर स्वर्गीय सौन्दर्य की सृष्टि है।

भगवान के जन्म का यह मास अनेकों दैवी दिव्यताओं से परिपूर्ण है। इसी मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी को भगवान श्रीकृष्ण की लीलासहचरी श्रीराधा जी अवतरित हुईं। इन दोनों के अवतरण के मध्य शुभता के देवता श्रीगणेश जी शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को माता पार्वती के आंगन में आए। इस तरह भाद्रपद महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को श्रीगणेश चतुर्थी एवं भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी को श्रीराधाअष्टमी के दिव्य सुयोग-संयोग हैं। इन पंक्तियों के लेखक की ओर से आप सभी पाठकों-परिजनों को बधाई। प्रेमावतार श्रीकृष्ण, कृष्णप्रेम की साकार मूर्ति श्रीराधा जी और शुभता के देव मंगलमूर्ति श्रीगणेश- हम सभी के जीवन के प्रत्येक क्षण, प्रत्येक कण को प्रेम व शुभता की मंगलमयता प्रदान करें।

**सभी को सम्प्रेषक का स्नेह**

# HUMILITY

One of the virtuousness of spirituality is humility. Buddha says that the finest and foremost evidential blueprint of being born as a human is to be kind and humble. Humility along with gratitude and kindness is in a similar stream.

All the truly great men and women whose names have been etched in the corridors of immortality have all known to be humble. Humility is embedded in the eternal goodness of the soul and it is the bedrock, the core center of gratitude and wisdom.

In our lives, we remember several people who have been outstanding examples for individual success and growth. But we really reminisce people truly are great genuine achievers who have been humbled by their achievements. Humility has arrived upon such people with great wisdom and truth. The wisdom and ultimate truth being that everything is transitory. That the world is a huge illusion and everything that comes with this territory is also transient. Nothing lasts forever. And what we have achieved here on this planet, during this lifetime is because of divine grace and the reaping of our own good deeds in some previous life births. Therefore, the only spiritual jargon of cashbacks we shall all take with us when we die is how honestly, we felt and we treated the lowest amidst us while we were at the helm of good fortune.

The house of Tatas' is famous for their mammoth industrial and philanthropic contributions to this country. But their greatest legacy is humility. There is an entire university of education in humility that they have left behind for every individual, societies and institution to imbibe and practice.

Shri Ratan Tata and his predecessors like JRD Tata are exemplary people whose entire existence is like a learning. An entire generation who has interacted with the Tatas group Chairman during different occasions will mention one common thing. And that being how good and valuable they made the other person in front of them feel. They approached a clerk and a rich businessman with the same kind of humility. They never discriminated on any lines because they saw only humanity in front of them.

Another great family that is legendary and known for humility is the family of Narayana and Sudha Murthy. They are one of the most powerful couples, nationally and internationally but meeting them makes one extremely sensitive because that is the kind of self-effacement that is seen in their behavior. To know what real greatness is – one must at least watch these prodigious humans on virtual platforms and one is definitely left with an awe-inspiring feeling. A feeling that urges us to change for the good. These are lessons for a lifetime.

Nature teaches us to be humble constantly. Nature gives us in abundance and yet never encroaches or demands but quietly does its job with every passing moment. There is no sense of lapse or pride in anything Nature does or performs. A flower blooms because it is it's time to bloom. It spreads beauty and fragrance expects nothing in return. Nature is the best classroom when it comes to humility.

Life is complicated and tough but the route becomes a bit easier when we learn to be humble. When we learn that the best way to conduct our lives is with kindness and humility; it is then that we are beginning to live as real people.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

# मन का खेल सारा संसार

क्या हमने इस विषय पर कभी गौर किया है कि यह समस्त संसार केवल मन का खेल है । विराट मन से लेकर छोटे से छोटे मन का खेल यह संसार है । विराट मनवाले परब्रह्म परमात्मा के मन में स्फुरणा हुई कि मैं एक हूँ, बहुत हो जाऊँ "एकोऽहं बहुस्याम्' और वे परम शक्तिशाली परमात्मा अपनी इच्छामात्र से एक से बहुत हो गए । उन्हीं परमात्मा के मन की इच्छाशक्ति का रूप हम सारे मनुष्य हुए । हमने भी अपने-अपने मन के अनुसार जो – जो इच्छाएँ कीं उसे पूरा करने में हमने अपनी सारी शक्ति लगा दी और कमोवेश उसे ही पूरा किया । राजा दशरथ ने राम जैसी संतान का मन बनाया, तदनुसार तप किया और उन्हें राम मिल गए । देवकी को कृष्ण मिल गए । विश्वामित्र ने ब्रह्मर्षि बनने का मन बनाया और वे ब्रह्मर्षि बन गए ।

कहने का अर्थ यह है कि हम अपने मन के अनुसार ही संसार की कल्पना करते हैं । हर मनुष्य की कल्पना के अनुसार उसका संसार सजता है, सँवरता है, बनता है बिगङता है । विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण होने का मन बनाता है, सैनिक युद्ध में जीतने का मन बनाता है, सेवक सेवा का मन बनाता है, कवि कविता का मन बनाता है और ये सभी अपने-अपने निर्धारित मन के अनुसार कार्य करते हैं और तदनुसार सफलता पाते हैं । यानि यह संसार मन की कल्पना है, मन की उङान है, मन की हसरत है, मन की कसरत है । तो फिर संसार के निर्माण की जङ इस मन को ही निर्मल बनाना हमारे जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य होना चाहिए । क्योकि मन की भूमि में जैसा बीज बोया जाएगा वैसा ही हमारा यह मन बनेगा । इसलिए सूक्ति है – "मन चंगा तो कठौती में गंगा' । अगर मन गंगा सा पावन बनाना है तो इस मन की ही खबर सभी को लेनी होगी । तन के सौन्दर्य प्रसाधन की तरह मन के सौन्दर्य प्रसाधन कक्ष में हमें प्रवेश करना होगा और अपनी ही आत्मा का सुमधुर संगीत सुनना होगा जिससे हम मन के सौन्दर्य प्रसाधन कक्ष में प्रवेश कर सकें और वहाँ के सौन्दर्य विशेषज्ञ से मन को सजाने के रहस्य समझ सकें और आगे बढ सकें ।

क्या आप जानते हैं कि मन के सौन्दर्य विशेषज्ञ कौन हैं तो उत्तर है – सद्गुरु और वहाँ का सौन्दर्य प्रसाधन क्या है वह है भक्ति, ज्ञान और सत्कर्म तो आइए हम सभी मन के सौन्दर्य.प्रसाधन कक्ष में प्रवेश करें और स्वयं को गुणों के मणि-मुक्तकों से सजाकर स्वयं को ही निहारें ठीक उसी तरह जैसे तन के सौन्दर्य प्रसाधन कक्ष से निकलकर स्वयं की कान्ति को हम बार-बार निहारते हैं । यकीन मानिए अपने सजे हुए मन को देखने में भी उतना ही आनन्द आएगा या उससे भी ज्यादा आनन्द आएगा जितना तन को सजा हुआ देखने में आता है । हम अगर आजीवन अपने मन को सजाते चलें तो वह दिन दूर नहीं होगा कि हम तो सजेंगे ही, सारा संसार ही सज जाएगा क्योंकि संसार बनता है मनुष्यों से और मनुष्य बनता है मन से । मन सजा तो जग सजा, जग सजा तो मन हँसा तो आईए हम सभी मन के हास्य का सरंजाम जुटाएँ । मन से मन के सान्दर्य प्रसाधन कक्ष में प्रवेश करें और अपने मन के नव निर्माण के अद्भुत खेल के अद्भुत रहस्य को समझें । सच,

**जिसने समझ लिया मन का खेल, वह मुक्त हो गया**
**अन्य तो रहा बन्धन में और बन्धन में ही गया ।।**

**– डॉ. लीना सिन्हा**

# सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **बिहार के बक्सर जिले में सिद्धाश्रम है, विश्वामित्र की तपस्थली है, वहीं से गायत्री महामंत्र का सर्वप्रथम उद्घोष पूरी दुनिया में हुआ।**
- **प्रेयमार्ग है संसार का मार्ग, श्रेय मार्ग है आध्यात्म का मार्ग।**
- **गलती करने से ज्यादा खतरनाक है गलतफहमी पालना ।**
- **अंधापन शारीरिक कम होता है, मानसिक अंधापन ज्यादा होता है ।शारीरिक अंधापन जिस तरह राहें भटकाता है, उसी तरह से मानसिक अंधापन जीवन की राहें भटका देता है।**
- **भावना जब शिखर पर पहुंचती है तो वह महाभाव बनता है, जो चैतन्य महाप्रभु का था। महाभाव आगे चलकर प्रेम बनता है, जो मीरा का था।**
- **कहा जाता है जीवन चलने का नाम है, चरैवेति- चरैवेति, अतः चलते रहो, निरंतर आगे बढ़ना ही जीवन है, रुकना मृत्यु है। लेकिन निरंतर चलने के लिए एक चीज बहुत महत्वपूर्ण है, वह है रुकना।**
- **शरीर को निरंतर चलाने के लिए मन का ठहराव जरूरी है।शरीर कभी नहीं ठहरता, यह सोते-जागते, आराम की अवस्था में भी गतिशील रहता है। ठहराव शरीर का नहीं मन का होता है। अतः मन तेज या गलत दिशा में भागता है, तब तो और ज्यादा ठहराव की जरूरत है।**
- **जितने भी ऋषि -मुनि, तपस्वी हुए हैं, भक्त हुए हैं, आज के समय में कह सकते हैं जितने वैज्ञानिक हुए हैं, उन्होंने कुछ नया करने के लिए एकांत तलाशा।**
- **एकांत और अकेलापन में फर्क होता है अकेलापन नकारात्मक शब्द है, एकांत सकारात्मक शब्द है।**
- **अच्छी पढ़ाई करें इसके लिए भी एकांत चाहिए, कोई भी नया क्रिएशन कर रहे हैं, सृजन कर रहे हैं इसके लिए भी एकांत चाहिए।**
- **चलना वस्तुतः दो प्रकार का होता है- एक शरीर गति करता है, दूसरा मन गति करता है। मन की गति और शरीर की गति। लेकिन मन ही शरीर को चलाता है, उसे नियंत्रित भी करता है, अनियंत्रित भी करता है। अगर आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो उसकी गति को नियंत्रित करना भी अनिवार्य है।**
- **रुकने का अर्थ भौतिक शरीर की गति अर्थात कर्म से मुंह मोड़ना है, इसलिए कहा जाता है कि रुकना मृत्यु है। लेकिन दूसरे अर्थ में रुकना यानी मन की गति को विराम देना। क्योंकि मन अत्यंत चंचल है, उसे नियंत्रित करना है, उसे सही दिशा में ले जाने के लिए उसे रोकना अनिवार्य है। इसलिए ध्यान करना चाहिए।**
- **अगर चलना जीवन है तो रुकना पुनर्जीवन है, पुनर्जन्म भी कह सकते हैं ।जब मन रुक जाता है तो वह पुनर्निर्माण में सहायक होता है ।हमारे शरीर का फिर से रिस्ट्रक्चर होता है। कई उपयोगी सृजन का कारण बनता है।**
- **नकारात्मक मन शरीर की गति को बाधित करता है। अनेक रोगों से भर देता है और सकारात्मक मन (पॉजिटिव थिंकिंग) शरीर को पोषण देता है, रोगों से रक्षा कर आरोग्य प्रदान करता है। इसलिए मन को सही करें।**
- **कहा भी जाता है दुनिया में जितनी सारी बीमारियां हैं, 99% अब वैज्ञानिक भी कहते हैं ,मेडिकल डॉक्टर भी कहते हैं कि यह स्ट्रेस से होता है ,नेगेटिव थिंकिंग से होता है नकारात्मक सोच के कारण शरीर में अधिकांश बीमारियां होती हैं। इसलिए अगर आप प्रार्थना करते हैं, प्राणायाम करते हैं ,ध्यान करते हैं, अभिषेक करते हैं यज्ञ- हवन करते हैं, जप करते हैं तो आपका मन पॉजिटिव होता है। प्राण ऊर्जा में जो जहर है ,नकारात्मक ऊर्जा है, वह निकल जाती है।आप स्वस्थ हो जाते हैं । मन स्वच्छ होगा तो तन स्वस्थ होगा।**

- असफल व्यक्ति हारा हुआ नहीं है, आज असफल है कल सफल हो जाएगा। हताश व्यक्ति, निराश व्यक्ति हारा हुआ है।
- मन कल्पना करता है, लेकिन मस्तिष्क उसको एक आकार देता है। कोई भी विचार आपके अंदर आया, अगर मस्तिष्क सही है तो उस विचार को एक व्यवस्थित स्वरूप मिलता है।
- व्यक्ति से भी स्थान उन्नत होता है और स्थान से भी व्यक्ति उन्नत होता है।
- शरीर और मन की गति में अंतर होना ही सब प्रकार की समस्याओं का मूल है ।अतः शरीर और मन की गति में सामंजस्य होना अनिवार्य है।
- मन में तो इतने सारे विचार हैं इसको कैसे नियंत्रित किया जाए? इसके पीछे भी एक फोर्स काम करती है, वह स्पिरिचुअल इम्यूनिटी है। आध्यात्मिक क्षमता भी बढ़ानी होगी।
- हम अपने अंदर के मनो प्रतिरोधक क्षमता को कैसे बढ़ाए कि विपरीत परिस्थिति में भी दिमाग सही दिशा में चले, मन सही दिशा में चले और कदम हमारा सही उठे? इसलिए इनऑर्डर होना चाहिए शरीर, मन और भावना का, डिसऑर्डर नहीं हो ।शरीर से मन का संबंध हो, मन से भावना का संबंध हो, तभी आप स्वस्थ रहेंगे आपके सारे काम भी सही होंगे।
- बायो इम्यूनिटी की सभी बात करते हैं, शरीर की जीवनी शक्ति को बढ़ाने की बात करते हैं। शरीर की जीवनी शक्ति बढ़ती है साइको इम्यूनिटी से। बायो इम्यूनिटी और साइको इम्यूनिटी को Enhance करता है, ताकत देता है स्पिरिचुअल इम्यूनिटी।
- प्रतिकूल परिस्थिति में भी मनः स्थिति संतुलित कैसे रहे? हम फेल कर गए, लटक गए, मर गए, घर से भाग गए, डिप्रेशन में आ गए यानी हमारे अंदर साइको इम्यूनिटी की कमी है ।यह कैसे बढ़े? इसके लिए ही प्राणायाम, जप, ध्यान एवं व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा है ताकि हमारे अंदर साइको इम्यूनिटी आ सके।
- आनंद के लिए जीवन की गति और विचारों के प्रवाह को नियंत्रित कर उन्हें संतुलित करना होगा यही है आध्यात्मिकता।
- आध्यात्मिकता हमें सरल और सहज होना सिखाती है। हम सहज होकर अपने वास्तविक स्व यानी अपनी चेतना से जुड़ते हैं यानी अपनी आत्मा में स्थित होते हैं ।यही वास्तविक आनंद है यानी परम आनंद है।

# जिज्ञासा

**प्रश्नः - जब परमात्मा का कोई आकार, कोई रूप नहीं है तो हम उनका ध्यान कैसे करें?**

उत्तरः - आकाश का या हवा का कोई रूप या आकार है क्या? लेकिन हवा हमें अनुभूति देती है, प्राण देती है। जिस तरह से हवा प्राणवायु देती है उसी तरह आकाश भी जीवन देती है, उसी तरह से परमात्मा समस्त जीवन का आधार है वह दिखाई नहीं देता महसूस होता है । अगर उसे रूप व आकार में बांध दीजिएगा तो फिर वो एक व्यक्ति हो जाएंगे, भले ही वह कितने शक्तिशाली व्यक्ति ही क्यों ना हो, जबकि परमात्मा तो असीम है न, उनकी सर्वत्र उपस्थिति है न, अगर बांध दिए तो सर्वव्यापी कैसे कह पाएंगे? शक्ति का रूप व आकार होता है और उनका अपना - अपना प्रभाव क्षेत्र होता है। लेकिन परमात्मा का, परब्रह्म का, परमेश्वर का कोई रूप व आकार नहीं है। जिसमें सब समाए हुए हैं और जिससे सब का प्रादुर्भाव हुआ है, वह है परमात्मा। जब तक धारणा शक्ति नहीं तब तक ध्यान नहीं हो पाता परमात्मा का, इसके लिए मन की सूक्ष्मता की आवश्यकता होती है।

**प्रश्नः - विश्व गुरु महादेव बोले हैं प्रश्न दो प्रकार का होता है- प्रश्न का उत्तर मिले तो सही ना मिले तो सही दूसरा होता है जिसमें प्रश्न के उत्तर जानने की प्रबल इच्छा होती है, कृपा कर व्याख्या करें।**

उत्तरः - महादेव ज्ञान के स्रोत हैं, सभी ज्ञान की धाराएं उनसे निकली है पर वह विश्व गुरु नहीं हैं, वह आदिगुरु हैं। प्रश्न का उत्तर मिले तो ठीक न मिले तो ठीक,मन में प्रश्न है ही नहीं, इसका उत्तर यही है कि यह प्रश्न नही दिमाग की खुजली है। प्रश्न का उत्तर जानने की प्रबल इच्छा होती हैं यानि जिज्ञासा होती हैं और उसके प्रति हमे सजग होना चाहिए। प्रश्न अंतरभाव में पैदा हुआ खाली पन है जो अपने को अपने  भरने की मांग करता है।प्रश्न वह सार्थक है जो आपकी अनुभूति हो और उत्तर वह सार्थक है जो आपकी अनुभूति बन रही है।

प्रश्न वह है जो आपको बेचैन कर दे और उत्तर वह है जो बेचैनी के मनोमंथन के बाद नवनीत की तरह, मक्खन की तरह निकलकर सामने आए।

**प्रश्नः - क्या गुरु और शिष्य के बीच अनकंडीशनल लव होता है अगर जवाब हां है तो इसे मां और बच्चे के अनकंडीशनल लव से कंपेयर और कंट्रास्ट करें?**

उत्तरः - (पानी पीजिए छानकर और गुरु कीजिए जानकर) पहले अनकंडीशनल लव की बात थी । न आज ऐसे गुरु हैं,न ऐसे शिष्य हैं। गुरु और शिष्य के बीच होना चाहिए परस्पर समझ। शिष्य के मन में होना चाहिए कठोर श्रम करने की भावना और गुरु के मन में होना चाहिए दिशा - दर्शन की भावना। जब गुरु और शिष्य दोनों परिपक्व होते हैं तब अनकंडीशनल लव होता है। यह सतयुग के टाइम की बात है। विचार जब व्यवसाय  में बदल जाए और वासना किसी विचार को घेर लेते हैं तो विचार मृत हो जाता है, दूषित हो जाता है, विचार जहरीला हो जाता है, ऐसे में ये हो ही नहीं सकता।

**प्रश्न: - न विज्ञान अंधा है न धर्म लंगड़ा है, इंसान की सोच आंधी और लंगड़ी है। विज्ञान हमें साधन देता है धर्म हमें अच्छी भावनाएं देता है। गायत्री शक्तिपीठ के इस सदवाक्य को पढ़कर किसी ने प्रश्न पूछा है- किसी इंसान की सोच 100% सही न्यूनतम कितने दिनों में और कैसे हो सकती है?**

उत्तर: - यह कोई गणित का सवाल नहीं है की एक टोकरी में पांच केले थे, एक लड़के ने एक केला उठा लिया बताओ, कितने केले बचे। कितने दिनों में 100% सही हो सकती है?भावनाओं का परिष्कार मनुष्य की साधना, मनुष्य की वृत्ति पर निर्भर करता है। मन को साधते रहिए तो सोच सही हो। अगर जन्म-जन्मांतर का संस्कार उभरेगा फिर वह लपेटे में ले लेगा। साधना कितनी पक्की है, मन कितना सधा उस पर निर्भर करता है ,वह आपके प्रयास पर निर्भर करता है ।सबसे बड़ी बात है उसकी रुचि पर निर्भर करता है, साथ ही उसकी इच्छा पर निर्भर करता है। कभी नहीं हो सकता है और तत्काल भी हो सकता है। जब चेतना में चैतन्यता आएगी तब होगी। जब उसे होश आएगा तब होगी, जब जागृति आएगी तब होगी। आज तो हर आदमी अंधा बना हुआ है कोई सोच सही करना चाहता है क्या? हम सोचना ही नहीं चाहते, हम हवाओं में बहते हैं , सभी मोह निद्रा में सो रहे हैं। ये जो विडंबना भरी स्थिति है इसका कोई ठिकाना नहीं है। चिंतन नहीं है व्यक्तित्व में चिंतन लुप्त हो गया है। हम अपने पुरुषार्थ से अपना कल्याण ही नहीं चाहते, हम एक मसीहा ढूंढ रहे हैं। खबर मिली; मसीहा आ रहा है उधर हम लग जाते हैं। विक्रमादित्य के पीठ पर बैताल की तरह अपने को लाद देते हैं।

भावना की नींव पर व्यक्तित्व की इमारत गढ़ी जाती है। अच्छी भावना से अच्छा विचार आता है, विचार अच्छा होगा तो अच्छा कर्म बनता है,अच्छे कर्म करते- करते आदत बनती है ,आदत स्वभाव बनता है, वही स्वभाव लंबे समय के बाद चरित्र बनता है और वही चरित्र आपके भविष्य का निर्माण करता है। इसीलिए भाग्य को नहीं अपने चरित्र को सही करना चाहिए। जगने के लिए आपको अपने प्रारब्ध से संघर्ष करना होगा, अपनी रुचि से, अपनी वृत्ति से, अपनी सोच से संघर्ष करना होगा। जब तक मनुष्य खुद नहीं चाहेगा उसकी सोच शुद्ध नहीं होगी। 100% तो बहुत दूर की बात है। सही रूप उभरेगा उस दिन मानव के उत्थान का। जिस दिन होगा मिलन विश्व में धर्म और विज्ञान का।

# अगस्त माह की गतिविधियाँ

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डा0 अरूण कुमार जायसवाल

इस अवसर पर पूर्व प्राचार्या डा0 रेणु सिंह ने कहा-यह जगह सामान्य से असामान्य बनने की जगह है। इस अवसर का लाभ लें। मन से चैतन्य की यात्रा के लिए हीं यह सत्र है

इस अवसर मेयर बेण प्रिया ने कहा-मन तो चंचल होता है, मन को शांत करने का यह महान स्थल है

इस अवसर पर भोजपुरी फिल्म के अभिनेता कुणाल सिंह ने कहा जीवन सीखने का नाम है। यहां आकर बहुत शांति मिली

गायत्री शक्तिपीठ सिमराही (सुपौल) में आयोजित प्रमंडलीय गोष्ठी को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जयसवाल

दिनांक 13 अगस्त(रविवार) 2023, प्रमंडलीय गोष्ठी गायत्री शक्तिपीठ, सिमराही (सुपौल)

जरूरतमंदों के लिए भोजन की तैयारी महिला मंडल के द्वारा

गायत्री परिवार, सहरसा जरूरतमंदों को भोजन वितरित करते हुए

रोज की तरह आज भी जरूरतमंदों के बीच भोजन प्रसाद वितरण करते हुए गायत्री परिवार, सहरसा

अवंतिका सिंह -: मुझे यहां आकर बहुत अच्छा लग रहा है एवं यहां पर मुझे प्राकृतिक चिकित्सा, योग और ध्यान सीखने का भी बहुत ही अच्छा अनुभव रहा

अरुण कुमार जायसवाल द्वारा रचित "जीवन गीता "पुस्तक का सेट आदरणीया शैल जीजी को भेंट करते हुए साथ में हैं बाएँ से हरीश कुमार, हिमांशु जी, अरुण जायसवाल, अवहिनव शेट्टी जायसवाल, शेखपुरा ज़िला जज राजकुमार जी एवं उनकी धर्मपत्नी

**शांतिकुंज में 1 से 9 अगस्त संजीवनी साधना सत्र एवम 3 से 6 अगस्त संगठन साधना सत्र में सहरसा उपजोन के अंतर्गत आने वाले पाँचो जिले सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया एवम बेगुसराय के करीब 400 परिजन समिल्लित हुए**

**शांतिकुंज भोजनालय में आस्वाद भोजन ग्रहण करते युवामंडल**

**मशाल यात्रा शांतिकुंज हरिद्वार**

**राष्ट्रीय सक्रिय कार्यकर्ता शिविर शांतिकुंज  हरिद्वार में बिहार राज्य के कार्यकर्ताओं के बीच प्रतिवेदन सह भावी योजनाओं को उदघोषित करते  हुए सहरसा उपजोन समन्वयक आदरणीय डा0 अरुण जायसवाल जी**

सहरसा उपजोन के अंतर्गत आने वाले पाँचो जिले सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, बेगुसराय के परिजन नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र अनुष्ठान का सामूहिक संकल्प लेते हुए

15 अगस्त को चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेते हुए बाल संस्कारशालाओं के बच्चे

15 अगस्त 2023 को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सभी बाल संस्कारशालाओं के बच्चों के बीच चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संपन्न किए गए

**पिछले 9 वर्षो लगातार गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान बहुत ही कम शुल्क पर गरीब बच्चों को शिक्षा देने का काम कर रहा है और शिक्षा के साथ आधात्मिक ज्ञान और इस संसार में सफल होने का हूनर भी बताया जाता हैं। यहां के कंप्यूटर क्लास में हमेशा बताया जाता हैं कि आप एक छात्र के रूप आए हैं और टीचर बन के यहां से जाएंगे**

**गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान में प्रोजेक्टर के माध्यम से वर्ग का संचालन**

**गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ करते हुए**

सहरसा जिला के कहरा प्रखंड के अंतर्गत आने वाले विद्यापति नगर मोहल्ले में, गायत्री परिवार सहरसा द्वारा कुल 35 घरों में देव स्थापना एवम गायत्री यज्ञ कराया गया

श्रावण मास के अंतिम सोमवार को मंदिर के सजावट की तैयारी

दिल को छू लेने वाली छवि

विनीत साबू (चेन्नई) के द्वारा उनके पिता के जन्मदिन के शुभ अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में बाल संस्कार शालाओं के बच्चों के बीच अध्ययन से संबंधित सामग्रियों का वितरण

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडोतोलन

दिनांक 31/08/2023, श्रावणी पर्व (रक्षाबंधन) पूजन (हेमाद्रि संकल्प एवं दस स्नान)

# दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

लाभिषेक के उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

जागरण

गायत्री शक्तिपीठ प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर में रूद्राभिषेक करते श्रद्धालु

पैदल चलकर पहुंचे श्रद्धालुओं को अधिक देर इंतजार नहीं करना पड़े। गायत्री शक्तिपीठ में सुबह छह पांच से संध्या साढ़े सात बजे तक कई शिफ्ट में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने रूद्राभिषेक किया। शिवालयों में भजन- कीर्तन होता रहा और हर-हर महादेव का नारा गूंजता रहा।

## प्रेम से भक्ति जुड़ने पर खिल जाती है सृष्टि

सत्र को संबोधित करते ट्रस्टी • जागरण

संस, सहरसा : रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार सत्र संपन्न हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि प्रेम के साथ भक्ति जुड़ जाए तो पूरी सृष्टि खिल जाती है। उन्होंने कहा कि भावना भावुकता नहीं बने, भावुकता को भाव में बदलना ही इस सत्र का मूल उद्देश्य है। यदि भाव पवित्र ऊर्जा में बदल जाए, यानि पवित्रता की प्राप्ति हो जाए तो जीवन सफल हो जाएगा। जीवन का परम लक्ष्य है ईश्वर की प्राप्ति । इसलिए सत्संग, स्वाध्याय, ध्यान, जप का तत्वज्ञान जरूरी है। इस अवसर पर अभिनव जायसवाल ने सत्र को संबोधित करते हुए कहा जीवन एक प्रयोगशाला है, इसमें धर्म, कर्म कीजिए। जीवन का अंतिम सत्य भक्ति है, ईश्वर भक्ति से नर से नारायण, मानव से महामानव, देव मानव बन सकते हैं। अंदर का स्नान जरूरी है,इसका माध्यम जप एवं ध्यान है। उन्होंने कहा भगवान शिव को प्रकृति प्यारी है, प्रकृति कभी माफ नहीं करती। प्रकृति कर्म सिद्धांत का पालन करती है। यदि आप अपने मन को वश में कर लेते हैं तो आपकी ईश्वर भक्ति से जीवन सफल हो जाएगा। अमेरिका से ध्यान का पांच दिवसीय गुर सीखने आई इलेक्ट्रिकल इंजीनियर अवंतिका सिंह ने सत्र को संबोधित करते हुए अपने छात्र जीवन की अनुभवों को विस्तार से जिक्र करते बताया कि किस तरह गायत्री मंत्र का जप एवं सतत गायत्री मंत्र लेखन ने उन्हें सफलता में सहयोग प्रदान किया। कहा कि यहां आकर बेहतर अनुभव हो रहा है। यह जगह पवित्र है, हमारी सफलता का रहस्य ब्रह्ममुहूर्त में अध्ययन एवं अपने रूटीन को पूरी तरह से पालन करना है।

### संत समागम सत्संग में शामिल होंगे कई विद्वान, हुई बैठक

संस, सहरसा : रविवार को सहरसा महर्षि मेंही योगाश्रम संत नगर में संत समागम की बैठक आयोजित हुई। विधायक गुंजेशवर साह की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में वर्ष में एकबार भव्य तरीके से संत समागत सत्संग आयोजित करने का निर्णय लिया गया। इसके लिए नगर निगम अंतर्गत सभी आश्रम में इस तरह का बैठक करने पर विचार किया गया। बैठक में विधायक ने बताया कि हम सभी गुरू के वचन,गुरू के मार्ग, के लिए समर्पित है। इस वर्ष 26 नवंबर 2023 को यह कार्यक्रम होना तय हुआ है। इस संदर्भ में दस सितंबर को हटियागाछी आश्रम में बैठक करने का फैसला लिया गया।। बैठक में स्वामी शंकर बाबा, स्वामी देवव्रत बाबा, स्वामी अनुभवानंद बाबा, ज्ञानानंद स्वामी ,महेशानंद बाबा, श्यामसुंदर बाबा , चंदन वर्मा, गणेश साह आदि उपस्थित रहे।

## मन को सही दिशा में चलाने के लिए ध्यान जरूरी : डॉ अरूण

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को महापौर ने किया संबोधित

प्रतिनिधि, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. सत्र को संबोधित करते डॉ अरूण कुमार जायसवाल ने कहा कि निरंतर चलते रहने के लिए मन का ठहराव जरूरी है. चलना दो प्रकार का होता है. शरीर की गति व मन की गति. मन की गति अत्यंत चंचल होती है. मन को नियंत्रित करना जरूरी है. मन को सही दिशा में चलाने के लिए ध्यान करना आवश्यक है. ठहराव शरीर का नहीं मन का होता है. उन्होंने कहा कि नाकरात्मक सोच के कारण अधिकांश बीमारियां होती है. साकारात्मक सोच से शरीर पोषित होता है. स्थिरता, एकात्मकता एवं मन की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए, हवन, जप एवं ध्यान करना आवश्यक है. शरीर मन एवं आत्मा में सामंजस्य होना चाहिए. इस अवसर पर पूर्व प्राचार्या डॉ रेणु सिंह ने कहा कि यह जगह सामान्य से असामान्य बनने की जगह है. इस अवसर का लाभ लें. मन से चैतन्य की यात्रा के लिए ही यह सत्र है. मेयर बैन प्रिया ने कहा कि मन तो चंचल होता है. मन को शांत करने का यह महान स्थल है. इस अवसर पर भोजपुरी फिल्म अभिनेता कुणाल सिंह के संबंध में डॉ अरूण कुमार जायसवाल ने कहा कि ये फिल्म के अमिताभ बच्चन हैं. चार दशक से फिल्म इंडस्ट्री में काम कर रहे हैं. कुणाल सिंह ने कहा कि इस स्थल पर पहुंचना सौभाग्य की बात है. जीवन सीखने का नाम है. यहां आकर शांति की अनुभूति हुई.

दैनिक भास्कर

सहरसा 22-08-2023

कार्यक्रम • गायत्री शक्तिपीठ में सोमवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का हुआ आयोजन

## नकरात्मक सोच के कारण होती है ज्यादातर बीमारियां सकारात्मक सोच ही शरीर के लिए फायदेमंद: डॉ. अरुण

भास्कर न्यूज़ | सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में सोमवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए ट्रस्टी अरूण कुमार जायसवाल ने कहा-निरंन्तर चलते रहने के लिए मन का ठहराव जरूरी है।चलना दो प्रकार का होता है।शरीर की गति एवं मन की गति।मन की गति अत्यंत चंचल होती है।मन कोई निर्यत्रित करना जरूरी है। मन को सही दिशा में चलाने के लिए ध्यान करना आवश्यक है।ठहराव शरीर का नहीं मन का होता है। उन्होंने कहा-नकरात्मक सोच के कारण अधिकांश बीमारियां होती है। सकारात्मक सोच से शरीर पोषित होता है।स्थिरता, एकात्मकता एवं मन की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए, हवन, जप एवं ध्यान करना आवश्यक है।कहा-शरीर मन एवं आत्मा में सामंजस्य होना चाहिए।

कुणाल सिंह। डॉ. रेणु सिंह, पूर्व प्राचार्य। बैन प्रिया, महापौर। डॉ. अरुण जायसवाल।

### यह जगह सामान्य से असामान्य बनने की, मन से चैतन्य की यात्रा करने का सत्र

इस अवसर पर पूर्व प्राचार्या डॉक्टर रेणु सिंह ने कहा-यह जगह सामान्य से असामान्य बनने की जगह है। इस अवसर का लाभ लें। मन से चैतन्य की यात्रा के लिए हीं यह सत्र है। महापौर बैन प्रिया ने कहा-मन तो चंचल होता है।मन को शांत करने का यह महान स्थल है। भोजपुरी फिल्म के अभिनेता कुणाल सिंह के संबंध में डॉक्टर अरूण कुमार जायसवाल ने कहा ये फिल्म के अमिताभ बच्चन हैं। 4दशक से फिल्म इंडस्ट्री में काम कर रहे हैं। कुणाल सिंह ने कहा - इस स्थल पर पहुंचना सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि जीवन सीखने का नाम है।यहां आकर शांति की अनुभूति हुई।

## संक्षिप्त खबरें ।

### भगवान शिव ही हैं जो कर्मानुसार नही भाव के अनुसार फल देते हैं: डॉ अरुण कुमार जयसवाल

**मार्गदर्शक न्यूज़, सहरसा।** सहरसा श्रावण मास के अंतिम सोमवारी को गायत्री शक्तिपीठ परिसर स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव का श्रृंगार शक्तिपीठ के युवा मंडल एवं प्रज्ञा मंडल द्वारा,फूल,माला,बेलपत्र द्वारा भव्य रूप से सजाया गया। प्रातः काल से ही संपूर्ण परिषर हरहर महादेव ,ओम नमःशिवाय के जयकारा से गूंजायमान होता रहा।इस अवसर पर सैकड़ो श्रधालुगण भक्त गण प्रातःकाल से हीं अपने अपने मनोवांछित कामना पूर्ति के लिए शिवलिंग पर जलाभिषेक,दुग्धाभिषेक तथा रुद्राभिषेक करते रहे।शक्तिपीठ में 13 पाली में देर संध्या तक रूद्राभिषेक हुआ। इस अवसर पर डॉ अरूण कुमार जायसवाल ने कहा भगवान शिव को श्रावण मास अत्यंत प्रिय है।जो भक्तगण भगवान शिव पर जलाभिषेक, दुग्धाभिषेक, एवं रुद्राभिषेक करते हैं।उनके उपर भगवान शिव विशेष नजर रखते हुए उनकी सारी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। और उन्हें अभयदान देते है।साथ ही अन्य देवी देवता भाग्य और कर्म के अनुसार फल देते है लेकिन भगवान शिव ही जो भाव के अनुसार फल देते हैं।

श्रावण मास महादेव का श्रृंगार युवा मंडल एवं प्रज्ञा मंडल द्वारा, फूल, माला, बेलपत्र द्वारा सजाया गया

## भगवान शिव ही हैं जो कर्मानुसार नहीं भाव के अनुसार फल देते हैं: डॉ अरुण कुमार जयसवाल

**दैनिक शुभ भास्कर, सुभाष चंद्र झा, सहरसा।** श्रावण मास के अंतिम सोमवारी को गायत्री शक्तिपीठ परिसर स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव का श्रृंगार शक्तिपीठ के युवा मंडल एवं प्रज्ञा मंडल द्वारा, फूल, माला, बेलपत्र द्वारा भव्य रूप से सजाया गया। प्रातः काल से ही संपूर्ण परिषर हरहर महादेव ,ओम नमःशिवाय के जयकारा से गूंजायमान होता रहा। इस अवसर पर सैकड़ो श्रधालुगण भक्त गण प्रातःकाल से हीं अपने अपने मनोवांछित कामना पूर्ति के लिए शिवलिंग पर जलाभिषेक,दुग्धाभिषेक तथा रुद्राभिषेक करते रहे।शक्तिपीठ में 13 पाली में देर संध्या तक रूद्राभिषेक हुआ। इस अवसर पर डॉ अरूण कुमार जायसवाल ने कहा भगवान शिव को श्रावण मास अत्यंत प्रिय है।जो भक्तगण भगवान शिव पर जलाभिषेक, दुग्धाभिषेक, एवं रुद्राभिषेक करते हैं।उनके उपर भगवान शिव विशेष नजर रखते हुए उनकी सारी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। और उन्हें अभयदान देते है।साथ ही अन्य देवी देवता भाग्य और कर्म के अनुसार फल देते है लेकिन भगवान शिव ही हैं जो भाव के अनुसार फल देते हैं।

दैनिक भास्कर

सहरसा 30-08-2023

आस्था • भोटिया गांव निवासी राजीव सिंह दानकर्ता ने मां पार्वती की मूर्ति पर पहनाया चांदी का मुकुट

## सावन की अंतिम सोमवारी पर देर शाम देवालयों में विशेष श्रृंगार पूजा, महादेव के भजन पर झूमे श्रद्धालु

### कल्याणेश्वर महादेव में भव्य श्रृंगार पूजा

# जलनेति क्रिया

जल नेति का सबसे बड़ा फायदा यही है कि इसे रोजाना करने से करने से नाक साफ होती है। इससे नाक के बलगम के साथ लगी गंदगी और बैक्टीरिया बाहर निकल जाते हैं। इससे नाक का मार्ग भी साफ होता है। नाक की सफाई के लिए यह तरीका सबसे बेहतरीन है। इसे करने से हे फीवर और पराग से होने वाली एलर्जी (Allergy) से भी छुटकारा मिलता है।

**राइनाइटिस से बचाएं**

जल नेति करने से नाक के अंदर के संवेदनशील उत्तक शांत होते हैं, जो राइनाइटिस या एलर्जी का कारण बन सकते हैं। यह एक ऐसी प्रभावी तकनीक है, जिससे सांस लेने में आसानी होती है और दमा (Asthma) के लक्षण भी दूर होते हैं।

**टिनिटस को कम करें**

कानों के लिए भी यह क्रिया बेहद लाभदायक है। नियमित रूप से करने से टिनिटस से छुटकारा मिलता है और इसके साथ ही कान के इंफेक्शन से भी छुटकारा मिलता है।

**माइग्रेन (Migrain) से राहत**

माइग्रेन की समस्या आजकल सामान्य होती जा रही है और इसके लिए लोग दवाईयों का सहारा लेते हैं। लेकिन अगर वो जल नेति करें तो उन्हें माइग्रेन से राहत मिल सकती है। इसके साथ ही साइनोसाइटिस (Sinusitis) से भी छुटकारा मिल सकता है।

**अपर रेस्पिरेटरी ट्रैक्ट (Upper respiratory infection) की सफाई**

जल नेति से अपर रेस्पिरेटरी ट्रैक्ट की सफाई होती है। जिससे इस दौरान होने वाली सामान्य समस्याएं जैसे गले में खराश, टॉन्सिल्स या सूखी खांसी आदि से भी राहत मिलती है।

**आंखों के लिए लाभदायक**

इस क्रिया को रोज करने से आंख की नलिका साफ होती है जिससे दृष्टि (Vision) में सुधार होता है।

**पेट के लिए लाभदायक**

यह पेट के लिए भी लाभदायक है इससे पाचन क्रिया (Digestion) सुधरती है।

**दिमाग (Brain) के लिए बेहतरीन**

जल नेति का प्रभाव हमारे नर्वस सिस्टम और दिमाग पर भी पड़ता है। इसे करने से तनाव (Tension) दूर होता है और दिमाग को शांति मिलती है। ऐसा माना जाता है कि इसे रोज करने से क्रोध और चिड़चिड़ापन भी दूर होता है। योग करने वाले लोग जल नेति करते हैं।

**माह अगस्त में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -**

- बेन प्रिया (मेयर) सहरसा - प्राकृतिक चिकित्सा के लिए
- कुणाल सिंह (भोजपुरी फिल्म अभिनेता) मुम्बई - हवन, शिवाभिषेक, व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा के लिए
- अवंतिका सिंह (Electronic Chip Design Researcher & Scientist) अमेरिका- प्राकृतिक चिकित्सा, योग एवं ध्यान सीखने के लिए के लिए
- रेणु सिंह (पूर्व प्राचार्य) सहरसा - व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा के लिए

# आगामी कार्यक्रम

- **3 सितंबर उपजोन की वार्षिक बैठक: - जिसमें पिछले 1 वर्ष में किए गए कार्यों की समीक्षा एवं आगामी 1 वर्ष की अवधि में होने वाले कार्यक्रमों का निर्धारण।**
- **3 सितंबर विशेष भोजन प्रसाद का अयोजन।**
- **5 सितंबर कंप्यूटर कक्षा के छात्र- छात्राओं द्वारा शिक्षक दिवस का अयोजन।**
- **6 सितंबर कृष्ण जन्माष्टमी के पर्व का धूम धाम से आयोजन।**
- **17 सितंबर विश्वकर्मा भगवान का पूजन।**
- **28 सितंबर अनंत चतुर्दशी का पूजन।**

# मन सबका सुन्दर बनाना गुरुवर

अगर प्रतियोगिता हो सुन्दर मन की, तो मुझको भी विजय दिलाना गुरुवर

मन मेरा सुन्दर बनाना गुरुवर, सुन्दर पथ पर चलाना गुरुवर

नहीं कुछ भी इस जग से चाहिए, पर इस जग के आँसू पुँछवाना गुरुवर

क्रन्दन जग का हरना गुरुवर, मन सभी का सुन्दर बनाना गुरुवर

हर कोई इस प्रतियोगिता में, जब लेगा बढ-चढकर हिस्सा

फिर सबका मन वहाँ होगा सुन्दर, नहीं छुपा होगा वहाँ कोई बन्दर

यहाँ तन के सौन्दर्य की प्रतियोगिता, हर जगह दिखती है गुरुवर

पर मन के सौन्दर्य की प्रतियोगिता, कहीं नहीं दिखती है गुरुवर

उस प्रतियोगिता के जनक तुम बनना गुरुवर, भुवनमोहन बन सबको रिझाना गुरुवर

मन सबका सुन्दर बनाना गुरुवर, प्रज्ञायुग को धरा पर लाना गुरुवर

**– डॉ. लीना सिन्हा**

# परिचय

**सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।**
**गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।**

## गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

**स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं**

**Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602**


| | | |
|---|---|---|
| **पत्राचार** | : | **गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)** |
| **संपर्क सूत्र** | : | **06478-228787, 9470454241** |
| **Email** | : | **gspsaharsa@gmail.com** |
| **Website** | : | **https://gsps.co.in/** |
| **Social Connect** | : | **https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA** |
| | | **https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39** |
| | | **https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en** |
| | | **https://www.kooapp.com/profile/gayatri7AJ0S6** |
| | | **https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en** |
| | | **https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/** |